वे दिन भी क्या दिन थे

पाठ का सारांश

इस पाठ में भविष्य में होने वाले परिवर्तनों को बड़े ही मजेदार ढंग से बताया गया है। कुम्मी और रोहित नाम के दो बच्चे हैं। कुम्मी ने अपनी डायरी में 17 मई 2155 की रात को लिखा, "आज रोहित को सचमुच की एक पुस्तक मिली है।"

पुस्तक पुरानी थी। कुम्मी के दादा ने बताया था कि जब वे बहुत छोटे थे तब उनके दादा ने कहा था कि उनके ज़माने में कहानियाँ कागज पर छपती थीं और पढ़ी जाती थीं। पाठक को पृष्ठ पलटने होते थे। सारे शब्द स्थिर थे, चलते नहीं थे। रोहित ने इस पर कहा कि तब तो पढ़ने के बाद ऐसी पुस्तकें बेकार हो जाती होंगी। इससे तो अच्छा हमारा टेलीविजन है जिसके पर्दे पर बहुत-सी पुस्तकों की सामग्री आ जाती है और फिर भी यह पुस्तक नई की नई रहती है।

रोहित को जो सचमुच की पुस्तक मिली है उसमें स्कूल के बारे में काफी दिलचस्प बातें लिखी हैं। अब तो हर विद्यार्थी के घर में एक मशीन होती है जिसमें टेलीविजन की तरह का एक पर्दा होता है। रोज नियम से उसके सामने बैठकर विद्यार्थियों को वह सब याद करना होता है जो वह मशीन हमें बताती है। सारा गृहकार्य करके दूसरे दिन उसी मशीन में डाल देना होता है। हमारी गलतियाँ बताकर फिर वह हमें समझाती है। एक विषय पूरा होने पर वही मशीन हमारी परीक्षा । लेकर हमें आगे पढ़ाना आरंभ कर देती है। कुम्मी ये सारी बातें कहते-कहते थक गई। तभी उसे याद आया कि एक बार जब उससे भूगोल में रोज वही गलतियाँ होने लगीं थीं तो उसकी माँ ने मुहल्ले के अध्यक्ष को बताया था। तब एक आदमी आया था और उसने उस मशीन के पुर्जे-पुर्जे अलग कर दिए। उसके बाद उसने सभी पुर्जों को फिर से जोड़कर उसकी गति कुछ धीमी कर दी, जिससे कुम्मी से गलतियां होना बंद हो गया।

रोहित ने कुम्मी को बताया कि पहले मशीन की जगह अध्यापक होते थे जो बच्चों को सारे विषय समझाते थे, गृहकार्य देते थे और प्रश्न पूछते थे। बच्चे एक विशेष भवन में पढ़ते थे, जिसे स्कूल कहते थे। एक आयु के बच्चे एक साथ बैठते थे और एक समय में एक जैसी चीजें सीखते थे। कुम्मी ने भी पुस्तक पढ़ने की इच्छा जाहिर की क्योंकि वह जानना चाहती थी कि तब स्कूल कैसे होते थे। वह पुस्तक पढ़कर स्कूल के बारे में अजीब-अजीब बातें जानने को उत्सुक हो रही थी कि तभी माँ की आवाज कानों में पड़ी और दोनों बच्चे (रोहित और कुम्मी) अपने-अपने घर की ओर चल दिए।

सबक का समय हो गया था। कुम्मी जैसे ही घर पहुँची अंदर मशीन आगे का सबक देने को तैयार थी। मशीन से आवाज आनी आरंभ हो गई, "सबसे पहले आज तुम्हें गणित सीखना है। कल का होमवर्क छेद में डालो ......" कुम्मी ने वैसा ही किया। लेकिन उसे इस मशीन से

ज्यादा अच्छा पुराने जमाने का स्कूल लगा जहाँ एक आयु के बच्चे एक साथ पढ़ा करते थे, एक साथ हँसते-खेलते थे।

वह सोच रही थी कि तब बच्चों को स्कूल जाने में बड़ा मजा आता होगा। बच्चे बहुत खुश रहते होंगे।

शब्दार्थ :

पृष्ठ- पन्ना।
पश्चात्- बाद।
सदियों पहले- वर्षों पहले।
रफ्तार- चाल।
सबक- पाठ।
आरंभ- शुरू।